Toppersnotes®
Unleash the topper in you

RAS

राजस्थान प्रशासनिक सेवा

राजस्थान लोक सेवा आयोग (RPSC)

भाग – 11

समाजशास्त्र, प्रबंधन, लेखांकन, अंकेक्षण एवं प्रशासकीय नीतिशास्त्र

SIERRA INNOVATIONS

RAS

भाग-11

समाजशास्त्र

S.No.	Chapter Name	Page No.

1.	**भारत में समाजशास्त्रीय विचारों का विकास**
	• समाजशास्त्र
	• उपयोगिता
	• समाजशास्त्र की प्रकृति
	• समाजशास्त्री परिप्रेक्ष्य
	  ○ परिप्रेक्ष्य का अर्थ
	  ○ समाजशास्त्र का उद्‌भव व विकास
		1

2.	**सामाजिक मूल्य** • मुखर्जी के अनुसार सामाजिक मूल्य की परिभाषा • मूल्यों का उद्‌भव • सामाजिक मूल्यों का संस्तरण • सामाजिक मूल्यों के विभिन्न प्रकार • गैर सामाजिक मूल्य या अपमूल्य की अवधारणा	4
3.	**जाति, वर्ग एवं व्यवसाय** • भारत में जाति व्यवस्था की उत्पत्ति • भारत में जाति व्यवस्था की उत्पत्ति से संबंधित सिद्धांत • भारत में जाति व्यवस्था का महत्व और इसके बदलते परिदृश्य • जाति की विशेषताएँ • जाति प्रथा के गुण • जाति प्रथा के दोष • प्रभुजाति की अवधारणा • जाति और वर्ग	7

4.	**संस्कृतिकरण**
	• संस्कृतिकरण की प्रक्रिया
	• संस्कृतिकरण की विशेषताएँ
	  ○ सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिवर्तन का सिद्धांत
	  ○ संस्कृतिकरण की इकाई समूह
	  ○ पदमूलक परिवर्तन
	  ○ द्विमार्गी प्रक्रिया
	  ○ विचारधारा–गृहिता प्रक्रिया
	  ○ अग्रिम सामाजीकरण
	  ○ संस्कृतिकरण के अनेक प्रतिमान
	  ○ पुरातन प्रक्रिया
	  ○ निम्न–जातियों की महत्त्वाकांक्षा
	  ○ उच्च–जातियों से संबंध
		17

	○ प्रबल–जाति का अनुकरण • संस्कार, राजनैतिक और आर्थिक शक्तियों का महत्त्व • संस्कृतिकरण के प्रोत्साहन के कारक ○ धार्मिक कारक ○ सामाजिक सुधार आन्दोलन ○ राजनैतिक कारक ○ आर्थिक कारक ○ नगरीकरण एवं औद्यागीकरण ○ आधुनिक शिक्षा • संस्कृतिकरण का आलोचनात्मक विश्लेषण ○ सीमित सम्प्रत्यय ○ सम्प्रत्ययों की पोटली ○ प्रकार्यात्मक सम्प्रत्यय ○ संस्कृति के संदर्भ में परिवर्तन ○ सन्दर्भ–समूहों में अतर ○ मात्र जाति व्यवस्था के लिए उपयुक्त ○ सिद्धांत की स्थापना नहीं करती है ○ गैर–सांस्कृतिक परम्पराओं की उपेक्षा ○ विवादास्पद कथन ○ लम्बवत् गतिशीलता असंभव ○ दुष्कार्यात्मक ○ असंस्कृतिकरण ○ इकाई की अस्पष्टता ○ अनुकरण की प्रक्रिया ○ सर्वव्यापकता का अभाव	
5.	**वर्ण, आश्रम, पुरूषार्थ एवं संस्कार व्यवस्था** • वर्ण व्यवस्था • वर्णाश्रम व्यवस्था ○ ब्राह्मण ○ क्षत्रिय ○ वैश्य ○ शूद्र ○ मिश्रवर्ण • वर्ण व्यवस्था की विशेषताएँ • वर्ण व्यवस्था की उपयोगिता • वर्ण तथा जाति में अन्तर • आश्रम ○ ब्रह्मचर्य ○ गृहस्थ ○ वानप्रस्थ ○ संन्यास • पुरुषार्थ ○ धर्म ○ अर्थ ○ काम ○ मोक्ष	**26**

	○ पुरूषार्थ का महत्व • संस्कार ○ गर्भाधान संस्कार ○ पुंसवन संस्कार ○ सीमन्तोन्नयन संस्कार ○ जातकर्म संस्कार ○ नामकरण संस्कार ○ निष्क्रगण संस्कार ○ अन्नप्राशन संस्कार ○ चूडाकर्म या मुंडन संस्कार ○ कर्णभेद या कर्णवेध संस्कार ○ उपनयन संस्कार ○ वेदारंभ या विद्यारंभ संस्कार ○ केशांत संस्कार ○ समवर्तन संस्कार ○ विवाह संस्कार ○ वानप्रस्थ संस्कार ○ सन्यास संस्कार ○ अंत्येष्टि संस्कार • आठ प्रकार के विवाह ○ अन्तर्जातीय विवाह • सगोत्र, सप्रवर और सपिण्ड विवाह का निषेध • नियोग प्रथा • विवाह–विच्छेद या तलाक • संस्कारों का महत्व	
6.	**धर्मनिरपेक्षता** • धर्म ○ भारत में धर्म का महत्व ○ धर्म निरपेक्ष राज्य की विशेषताएँ ○ धर्मनिरपेक्षता का यूरोपीय मॉडल ○ धर्मनिरपेक्षता का भारतीय मॉडल ○ धर्मनिरपेक्षता का पश्चिमी मॉडल ○ भारतीय धर्मनिरपेक्षता की आलोचनाएँ ○ धर्मनिरपेक्षता की विशेषताएँ ○ धर्मनिरपेक्ष समाज के लिए आवश्यताएँ ○ भिन्न धर्मों के अनुयायियों के बीच किसी भी प्रकार का भेदभाव न हो। • भारत में धर्म–निरपेक्षता • धर्मनिरपेक्ष राज्य में राज्य की भूमिका ○ भारतीय धर्मनिरपेक्षवाद और पश्चिमी धर्मनिरपेक्षवाद में अंतरः • आधुनिक समय में धर्मनिरपेक्ष राज्य की आवश्यकता के कारण • भारतीय धर्मनिरपेक्षता की आलोचनाएँ • सहिष्णुता • धर्मपरिवर्तन	**48**

7.	**मुद्दे एवं सामाजिक समस्यायें** • सामाजिक बुराईयों के कारण • भारत में सामाजिक मुद्दों के रुप o निरक्षरता o गरीबी o बाल विवाह o अकाल/भुखमरी o बाल रोजगार o अपराध o जातिवाद o मदिरापान o दहेज प्रथा o महिलाओं से भेदभाव o भिक्षावृत्ति o साफ सफाई • धर्म	**55**
8.	**राजस्थान के जनजातीय समुदाय** • राजस्थान की भील जनजाति o भीलों की वेशभूषा o भील जनजाति से संबंधित महत्त्वपूर्ण शब्दावली • मीणा जनजाति o आजीविका o सामाजिक जीवन o महत्त्वपूर्ण तथ्य • गरासिया जनजाति o प्रमुख विशिष्टताएँ o महत्त्वपूर्ण तथ्य o वेशभूषा एवं आभूषण • जनजाति विकास • जनजाति के विकास हेतु कार्यरत संस्थाएँ व आयोग	**65**

प्रबंधन

S.No.	Chapter Name	Page No.

9.	**प्रबंधन – क्षेत्र, अवधारणा एवं कार्य**
	• विशेषताएँ एवं लक्षण
	• प्रकृति
	  ○ प्रबन्ध बहु–विधा के रूप में
	  ○ प्रबंध विज्ञान एवं कला के रूप में
	  ○ प्रबन्ध कला के रूप में
	  ○ प्रबंध पेशे के रूप मे
	  ○ पेशेवर प्रबंध
	• प्रबंध के प्रमुख कार्य
	  ○ नियोजन
	  ○ संगठन
	  ○ नियुक्तियाँ
	  ○ निर्देशन
	  ○ समन्वय
	  ○ नियंत्रण
	  ○ उत्प्रेरण
	• प्रबन्ध क्षेत्र
	• क्रियात्मक क्षेत्र
	  ○ प्रबन्ध प्रक्रिया : विशेषताएँ
	• प्रबन्ध के कार्य
	• प्रबन्ध के सिद्धान्त एवं तकनीकें
	• नवीन प्रवृत्तियाँ
	  ○ उददेश्यों द्वारा प्रबन्ध
	  ○ अपवाद द्धारा प्रबन्ध
	• व्यूहरचनात्मक प्रबन्ध
		73

10.	**विपणन**
	• विपणन की पुरानी विचारधारा
	• विपणन अवधारणा या विपणन की आधुनिक/नवीन/विस्तृत विचारधारा
	  ○ आधुनिक विचारधारा की विशेषताएं
	• विपणन अवधारणा का दोष
	• विपणन के कार्य
	  ○ वस्तु नियोजन एवं विकास
	  ○ विक्रय
	  ○ क्रय
	  ○ परिवहन
	  ○ संग्रह
	  ○ मूल्य निर्धारण
	  ○ पैकेजिंग
	  ○ बाजार अनुसंधान
	  ○ विज्ञापन
	• विपणन मिश्रण को प्रभावित करने वाले तत्त्व
	• विपणन मिश्रण के घटक
		91

	• उत्पाद मिश्रण • मूल्य मिश्रण • वितरण मिश्रण • संवर्द्धन मिश्रण • विपणन मिश्रण का निर्माण	
11.	**धन का अधिकतमकरण** • लाभ का अधिकतमीकरण • धन के अधिकतमीकरण के उद्देश्य • वित्त के स्रोत, पूँजी संरचना एवं पूँजी की लागत o वित्त के स्त्रोत o स्थायी या दीर्घकालीन वित्त के स्रोत o साधारण एवं पूर्वाधिकार अंशों में अंतर • ऋण–पत्र • अर्जित आय का पुनः निवेश • विशिष्ट वित्तीय संस्थाएं • लीज/पटटे पर वित्त o अल्पकालीन वित्त के स्रोत • पूँजी ढांचा अथवा पूँजी संरचना o पूँजी संरचना को प्रभावित करने वाले तत्व/घटक • पूँजी की लागत o पूँजी की लागत की विशेषताएँ o पूँजी की लागत की अवधारणा का महत्त्व o पूँजी की लागत का वर्गीकरण o पूँजी की लागत की गणना • ऋण–पूँजी की लागत	**97**
12.	**नेतृत्व** • नेतृत्व की परिभाषाएं • नेतृत्व की प्रमुख विशेषताएं • नेतृत्व की शैली • क्रिस आर्गीरिस के अनुसार नेताओं में अन्तर • टेरी के अनुसार नेतृत्व के प्रकार o उपर्युक्त आधार पर नेतृत्व की शैलियां • नेतृत्व के कार्य • नेतृत्व की तकनीकें • नेतृत्व सम्बन्धी गुण • अभिप्रेरण अथवा प्रोत्साहन o अभिप्रेरण के उद्देश्य o अभिप्रेरण का महत्व o अभिप्रेरण के प्रकार o अभिप्रेरण को प्रभावित करने वाले घटक o अभिप्रेरण की विधियां व तकनीकें o अभिप्रेरण की आधुनिक विचारधाराएं • संचार o प्रशासन में संचार का महत्व o संचार के प्रकार o संचार के सिद्धान्त o संचार प्रक्रिया के अंग	**113**

	○ प्रभावी संचार की विशेषताएं ○ संचार की बाधाएं • भर्ती ○ भर्ती के स्रोत • प्रेरण का अर्थ ○ कर्मचारियों को प्रेरित करना ○ प्रेरण कार्यक्रम में चरण ○ प्रेरण कार्यक्रम के लाभ ○ विशिष्ट प्रेरण कार्यक्रम • प्रशिक्षण ○ प्रशिक्षण के विशेषतायें ○ प्रशिक्षण एवं शिक्षा ○ प्रशिक्षण के उद्देश्य ○ प्रशिक्षण के क्षेत्र ○ प्रशिक्षण के सिद्धान्त ○ प्रशिक्षण के प्रकार ○ प्रशिक्षण की प्रक्रिया ○ निष्पादन मूल्यांकन के उद्देश्य ○ लाभ ○ दोष ○ निष्पादन मूल्यांकन की सीमाएं	

लेखांकन एवं अंकेक्षण

S.No.	Chapter Name	Page No.
13.	**वित्तीय विवरण** • वित्तीय विवरण–विश्लेषण का तात्पर्य • वित्तीय विवरणों के विश्लेषण का महत्त्व • वित्तीय विवरणों के विश्लेषण के उद्देश्य • वित्तीय विवरणों के विश्लेषण की तकनीकें o तुलनात्मक विवरण o समरूप और सामान्य आकार विवरण o प्रवृत्ति विश्लेषण o अनुपात विश्लेषण o रोकड़ प्रवाह विश्लेषण • कार्यशील पूँजी o कार्यशील पूँजी की अवधारणा एवं प्रबन्ध o कार्यशील पूँजी प्रबन्ध • कार्यशील पूँजी की आवश्यकता एवं महत्व • पर्याप्त कार्यशील पूँजी के लाभ • कार्यशील पूँजी के प्रकार अथवा वर्गीकरण • कार्यशील पूँजी को निर्धारित करने वाले तत्व • उत्तरदायित्व लेखांकन o इंस्टीट्यूट ऑफ कॉस्ट एन्ड वर्क्स एकाउंटेंट्स ऑफ इण्डिया o उत्तरदायित्व लेखांकन के महत्वपूर्ण लक्षण या मूलभूत पहलू o उत्तरदायित्व लेखा के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए कदम o उत्तरदायित्व लेखांकन के लाभ o उत्तरदायित्व केन्द्र के प्रकार • सामाजिक लेखांकन o सामाजिक लेखांकन की विशेषताएँ o सामाजिक लेखांकन की आवश्यकता/लाभ • विशेषताएँ • प्रकार • आंतरिक लेखा परीक्षा • बाहरी लेखा परीक्षा • वित्तीय लेखापरीक्षा	**151**
14.	**अंकेक्षण** • अंकेक्षण के उद्देश्य o प्राथमिक उद्देश्य o द्वितीयक उद्देश्य o विशेष उद्देश्य • अंकेक्षण के लाभ • अंकेक्षण की सीमाएँ • आन्तरिक नियन्त्रण	**172**

	o एक अच्छी आन्तरिक नियंत्रण प्रणाली की विशेषताएँ o आन्तरिक नियन्त्रण प्रणाली के भाग o आंतरिक नियंत्रण के घटक o आंतरिक नियंत्रण की सीमाएँ o उद्देश्य o प्रकार • सामाजिक अंकेक्षण o महत्त्व o लाभ o सीमाएँ o भारत में सामाजिक लेखा परीक्षा • निष्पादन लेखा परीक्षा o निष्पादन लेखा परीक्षा का उद्देश्य • दक्षता लेखा परीक्षा/ कार्यकु''ालता • दक्षता लेखा परीक्षा अपने दायरे में बहुत व्यापक है। o दक्षता के मापन के लिए पूर्व–आव''यकताएँ o दक्षता लेखा परीक्षा का उद्देश्य o लाभ	
15.	**बजट** • भारतीय बजट का इतिहास • बजट की विशेषताएँ • बजट के प्रकार • बजट निर्माण के विभिन्न सिद्धांत o वार्षिकी का सिद्धांत o विलय अथवा समाप्त हो जाने का नियम o राजकोषीय अनुशासन o समावेशिता o सटीकता o पारदर्शिता और उत्तरदायित्व o बजट के अन्य सिद्धांत • **बजटरी नियंत्रण** o उद्देश्य o नियंत्रण की प्रकिया o सफल बजटरी नियंत्रण प्रणाली की आवश्यक शर्ते o लाभ o सीमाएँ	**187**

प्रशासकीय नीतिशास्त्र

S.No.	Chapter Name	Page No.
16.	**नीतिशास्त्र एवं मानवीय मूल्य** • नीतिशास्त्र • नीतिशास्त्र के निर्धारक तत्व/ कारक • नैतिक मूल्यों के प्रभाव व परिणाम • नीतिशास्त्र के आयाम • महापुरूषों, समाज सुधारकों तथा प्रशासकों के जीवन से प्राप्त शिक्षा • मानव मूल्य • नैतिक मूल्य आत्मनिष्ठ हैं या वस्तुनिष्ठ	195
17.	**नैतिक समप्रत्यय** • ऋत की अवधारणा • ऋण की अवधारणा • संकल्प की स्वतंत्रता एवं नैतिक उत्तरदायित्व • दंड • सुख • आनन्द • अच्छाई/शुभ • उपयोगितावाद • आत्मपर्णवाद • कर्तव्य • बाध्यता • ऐच्छिक कर्म • अनैच्छिक या निरैच्छिक कार्य • सद्गुण	222
18.	**निजी एवं सार्वजनिक संबंधों में नीतिशास्त्र की भूमिका** • निजी संबंधों में नीतिशास्त्र • प्रशासकों का आचरण • सत्यनिष्ठता • नेतृत्व • अभिवृत्ति • सिविल सेवाओं हेतु बुनियादी मूल्य • सहिष्णुता (Tolerance) • परानुभूति/समानुभूति • कमजोर वर्गों के प्रति करूणा • प्रशासनिक सुधार आयोग (ARC) की सिफारिशें • प्रशासन में नैतिकता	232
19.	**भगवद् गीता का नीतिशास्त्र एवं प्रशासन में इसकी भूमिका** • गीता का नैतिक दर्शन • निष्काम कर्मयोग • स्थितप्रज्ञ	242
20.	**महात्मा गांधी का नीतिशास्त्र** • गांधी जी के दार्शनिक विचार और उनका योगदान • गांधी जी के राजनीतिक विचार और उनका योगदान • गाँधी जी के सामाजिक संस्कृति विचार और योगदान • गाँधी जी के आर्थिक विचार एवं उनका योगदान • गाँधी जी के नैतिक विचार एंव योगदान	245

21.	**भारत एवं विश्व के नैतिक चिंतकों एवं दार्शनिकों का योगदान** • सुकरात • जीन रूसो • प्लेटो • जॉन स्टुअर्ट मिल • कान्ट • भारतीय दार्शनिक परम्परा	**247**
22.	**तनाव प्रबंधन** • तनाव • तनाव के प्रभाव • तनाव के कारण • उच्च तनाव के लक्षण • तनाव प्रबंधन	**266**
23.	**संवेगात्मक बुद्धि** • संवेगात्मक बुद्धि की संकल्पना • गोलमैन का विचार • दलीप सिंह (2003) • मुख्य परिभाषाएं • संवेगात्मक बुद्धि के प्रतिमान • संवेगात्मक बुद्धि के उपयोग • उच्च संवेगात्मक समझ रखने वालों की विशेषताएं • संवेगात्मक बुद्धि का प्रशासन में उपयोग	**271**
24.	**केस स्टडी** • केस स्टडी के उद्देश्य • केस स्टडी की विशेषताएं • केस स्टडी की उपयोगिता • केस स्टडी के उदहारण	**278**

I
CHAPTER

भारत में समाजशास्त्रीय विचारों का विकास

समाजशास्त्र

- समाज का वैज्ञानिक अध्ययन
- **समाज** – सभी प्रकार के व्यक्तियों के मध्य पाई जाने वाली सभी प्रकार की संस्थाओं तथा संगठनों से होता है।
  - अर्थात् यह सामाजिक व्यवस्थाओं का अध्ययन करता है।
- समाजशास्त्र की आवश्यकता का अनुभव जटिल समाजों व विभिन्न सामाजिक घटनाओं को समझने के लिए किया गया।
  - कालान्तर में इस विज्ञान का महत्त्व बढ़ता गया।
- **टी.बी. बाटोमोर के अनुसार** – हजारों वर्षों से लोगों ने उन समाजों व समूहों का अवलोकन और चिन्तन किया है, जिसमें वे रहते हैं, फिर भी समाजशास्त्र एक आधुनिक विज्ञान है और एक शताब्दी से अधिक पुराना नहीं है।

उपयोगिता

- विशेष तौर पर भारत जैसे विविधतावादी देशों में इसकी उपयोगिता और भी बढ़ जाती है।
- भारतीय समाज में प्रत्येक स्तर पर विभिन्नता देखी जा सकती हैं एक ओर धार्मिक–आर्थिक विषमताएँ हैं तो दूसरी तरफ परम्परावादी मूल्यों से हमारा नाता अभी बना हुआ है।
- शहरी समुदायों में आधुनिकता के मूल्य भी विद्यमान है।
- भारतीय समाज में व्याप्त परम्परा व आधुनिकता का मिश्रण भारत में भूमिका संघर्ष (Role Conflicts) की स्थिति पैदा करता है।
- इसके अतिरिक्त भारतीय समाज अनेक प्रकार की समस्याओं का सामना भी कर रहा है।
  - जातिवाद (Casteism)
  - सामाजिक असमानता (Social inequality)
  - स्त्रियों की गिरती स्थिति (Deterriorating condition of women)
- इनको समझने के लिए हमें अपने समाज को समझना होगा।
  - इस तरह समस्याओं के निराकरण के क्षेत्र में यह हमारी सहायता कर सकता है।
- भारतीय परिप्रेक्ष्य में, भिक्षावृत्ति, वेश्यावृत्ति, बाल अपराध, ग्रामीणों की समस्याओं के सामाजिक कारणों को खोज कर इनकी निष्पक्ष व्याख्या की जा सकती है।
  - इसी प्रकार भारत की राष्ट्रीय एकता में बाधक तत्वों को समाप्त करके एकता को बनाए रखा जा सकता है।
  - सम्पन्न व गौरवमयी परम्पराओं को बनाए रखकर सांस्कृतिक पहचान की रक्षा की जा सकती है।
- वर्तमान परिस्थितियों के विश्लेषण के आधार पर नवीन परिस्थितियों के प्रति अभियोजन क्षमता की वृद्धि होती है।

- इसके साथ–साथ समाजशास्त्र का अध्ययन ग्रामीण समाज के विकास में बाधाओं को समझने में सहायक है, जनजातियों की समस्याओं को समझने में उपयोगी है।
- परिवार नियोजन सम्बन्धी समस्याओं को समझने में उपयोगी है।

- हालाँकि उपर्युक्त वर्णित समस्याओं के राजनीतिक, आर्थिक व मनोवैज्ञानिक पहलू भी हैं, परन्तु समाजशास्त्रीय पहलू की उपेक्षा से ये समस्याएँ पूर्णतः कब्जे में नहीं आ पाएँगी।

समाजशात्र की प्रकृति

- समाजशात्र की प्रकति के रूप में यह देखा जाता है कि समाजशास्त्र कला है या विज्ञान।
- यदि विज्ञान है तो विशुद्ध भौतिक विज्ञान है या आंशिक विज्ञान।
- कुछ विद्वान वैज्ञानिक मानते हैं तथा कुछ वैज्ञानिक नहीं मानते ।
- विज्ञान के मानदण्डों पर समाजशास्त्र को नापने के लिए विज्ञान की विशेषता पर एक नजर डालना जरूरी है।

1. विषय–वस्तु के रूप में विज्ञान

- विषय–वस्तु के रूप में विज्ञान को परिभाषित करने वाले विद्वान उन्हीं विषयों को विज्ञान की श्रेणी में रखते हैं जो–
  - निश्चित गुणों वाले जड़ तत्त्व का अध्ययन करते हों, तथा
  - अध्ययन से प्राप्त निष्कर्षों को समान रूप से समान परिणाम व भविष्यवाणी के साथ बिना किसी देश, काल परिस्थिति में लागू किया जा सकता है।
  - इस रूप में समाजशास्त्र को विज्ञान मानने में विद्वानों को कठिनाई है क्योंकि समाजशास्त्र एक ऐसी विषयवस्तु का अध्ययन करता है, जो कि परिवर्तनशील है तथा मनोवैज्ञानिक गुणों से प्रभावित होती है।
    - ✓ जैसे– आत्महत्या के विभिन्न कारणों के अनुसंधान के पश्चात् यह तो माना जा सकता है, कि अमुक कारण आत्महत्या (Suicide) के लिए उत्तरदायी है, परन्तु यह पूर्णतः नहीं कहा जा सकता कि यह समान कारण ही भविष्य में होने प्रत्येक देश, काल, समाज स्थान आदि पर होने वाली आत्महत्या के लिए जिम्मेदार होंगे, जबकि ज्यादातर विद्वान विज्ञान को विषय–वस्तु के अध्ययन तक सीमित न मानकर उसको किसी भी विषय के अध्ययन का एक दृष्टिकोण मानते हैं।

2. दृष्टिकोण के रूप में विज्ञान (Science as an approach)

- विज्ञान एक दृष्टिकोण है।
- किसी समस्या, परिस्थिति तथा तथ्य को व्यवस्थित ढंग से अध्ययन करने तथा उसको समझने के प्रयास को विज्ञान माना जा सकता है।

समाजशास्त्री परिप्रेक्ष्य

परिप्रेक्ष्य का अर्थ

- किसी भी विषय के अध्ययन में एक विशेष पक्ष या पहलू या दृष्टिकोण को लेकर चला जाता है।
  - यह विशेष दृष्टिकोणीय झुकाव (प्कमवसवहपबंस व्तपमदजंजपवद) परिप्रेक्ष्य कहलाता है।
- किसी वस्तु के अनेक पक्ष हो सकते हैं तथा उसके पक्ष विशेष का अध्ययन अनुशासनों से किया जाता है।

समाजशास्त्र का उद्‌भव व विकास

- समाजशास्त्र का उद्‌भव 19 वीं सदी में हुआ।
- उस समय यूरोपीय समाज विभिन्न प्रकार के परिवर्तन से गुजर रहा था।
- औद्योगिक क्रांति के फलस्वरूप यूरोप का सामाजिक–आर्थिक वातावरण गहराई से प्रभावित हुआ।
- फ्रांस की राज्य क्रांति ने 'सामंत प्रथा', 'राजतंत्र' को समाप्त कर दिया था।
- उस समय के समाज में अनेक प्रकार की समस्याएँ उभरकर सामने आ रही थीं।
- उन समस्याओं का हल दार्शनिकों तथा राजनीतिशास्त्रियों के पास उपलब्ध नहीं था।
- ऐसी स्थिति में ऑगस्ट कॉम्टे (August Comte) ने समाजशास्त्र (Sociology) की चर्चा की।
- कॉम्टे को समाजशास्त्र का जनक माना जाता है।

Toppersnotes
Unleash the topper in you

2 CHAPTER सामाजिक मूल्य

समाज जिन बातों को सामाजिक लक्ष्यों या उद्देश्यों की पूर्ति के लिए आवश्यक मानता है, उनको सामाजिक मूल्य कहते हैं।

- सामाजिक मूल्य वे प्रतिमान या काम करने या सीखने के तरीके हैं जो समाज द्वारा मान्य हैं या जिनकों समाज अपने हित में स्वीकार कर लेता है।
- समाज की स्वीकृति मिलने पर ही कोई तरीका सामाजिक मूल्य का रूप धारण करता हैं।
- डॉ. राधाकमल मुखर्जी ने 'दि सोशियल स्ट्रक्चर ऑफ वैल्यूज' नामक पुस्तक में सामाजिक मूल्यों के समाजशास्त्रीय सिद्धान्त का प्रतिपादन किया।
  - उनके अनुसार सामाजिक मूल्यों के बारे में सार्वभौमिक सामान्य विचार प्रतिपादित किये बिना मानव समुदाय की वास्तविक प्रगति नहीं हो सकेगी।
- डॉ. मुखर्जी के अनुसार सामाजिक संगठन तथा व्यवस्था का आधार सामाजिक मूल्य ही है।
- मुखर्जी ने सामाजिक मूल्यों को इस प्रकार परिभाषित किया है – 'मूल्य, समाज द्वारा मान्य वे इच्छाएँ तथा लक्ष्य हैं जिनका सीखने या समाजीकरण की प्रक्रिया द्वारा आन्तरीकरण होता है और जो प्राकृतिक अधिमान्यताएँ मानक तथा अभिलाषाएँ बन जाती हैं।'

मुखर्जी के अनुसार सामाजिक मूल्य की परिभाषा

- मूल्यों का एक सामाजिक आधार होता है।
- मूल्य समाज द्वारा मान्यता प्राप्त होते हैं। इसलिए लोग उन्हें ग्रहण करने में संतोष का अनुभव करते हैं।
- मूल्य समाज द्वारा मान्यता प्राप्त इच्छाओं तथा लक्ष्यों को अभिव्यक्त करते हैं।
- सामाजिक मूल्यों का आन्तरीकरण सीखने या समाजीकरण की प्रक्रिया द्वारा होता है।
- सामाजिक मूल्य हमें सामाजिक विरासत के रूप में हमारे पूर्वजों से प्राप्त होते हैं।
- सामाजिक मूल्यों के द्वारा व्यक्तियों की अनेक आवश्यकताओं की पूर्ति होती है।
- मूल्यों के आधार पर समाज में लोगों के व्यवहार तथा भूमिकाओं का निर्धारण होता है।
- मूल्यों के माध्यम से सामाजिक समूह अन्तः क्रियाओं द्वारा विभिन्न आदर्शों तथा नैतिकता के स्तरों को प्रस्तुत करते हैं।
- समाज में प्रस्थिति तथा भूमिकाएँ मूल्यों से संबंधित होती हैं।
- मूल्यों में परिवर्तन तथा नवीन मूल्यों का प्रादुर्भाव होने से लोगों के व्यवहारों में परिवर्तन हो जाता है।
- सामाजिक मूल्यों में परिवर्तन होने पर ही हम सामाजिक संरचना में होने वाले परिवर्तनों को जान सकते हैं।
- मूल्य लोगों के सामने एक ऐसा आदर्श प्रस्तुत करते हैं, जिनसे प्रेरित होकर वे अपना जीवन व्यतीत करते हैं।

मूल्यों का उद्‌भव

- डॉ. मुखर्जी ने सामाजिक मूल्यों के उद्‌भव को समाज में ही खोजने का प्रयास किया है।

- डॉ. मुखर्जी का कहना है कि व्यक्ति अपने जीवन को भली–भाँति शांतिपूर्वक व्यतीत करने की दृष्टि से ऐसे वातावरण का निर्माण कुछ प्रतिमानों के आधार पर करने का प्रयास करता है जिसमें व्यक्ति सुख व शांति के साथ रह सके।
- वे प्रतिमान समाज के हित में होने के कारण संपूर्ण समाज द्वारा मान्य होकर सामाजिक मूल्यों का स्थान ग्रहण कर लेते हैं।
- डॉ. मुखर्जी ने इस संबंध में कहा हैं, ''मानव समाज का अस्तित्व मूल्यों पर आधारित है।''
- **''इसके द्वारा मनुष्यों की इच्छाओं और प्रवृत्तियों पर नियंत्रण होता है।'' प्रत्येक सामाजिक मूल्य का उद्‌भव तीन विभिन्न स्तरों में होता है –**
  - **लक्ष्य**
    - मानव जीवन की आवश्यकताएँ मानव जीवन के लक्ष्य का निर्धारण करती है।
    - इन लक्ष्यों का निर्धारण करने के उपरांत मनुष्य इनके माध्यम से अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करता है जिस पर आवश्यकताओं की अधिकतम पूर्ति होती है, उन्हीं को समाज में अधिकतम व्यक्ति स्वीकार कर लेते है।
  - **आदर्श**
    - जिन लक्ष्यों की सहायता से आवश्यकताओं की पूर्ति होने लगती है, उनको समाज आदर्श के रूप में स्वीकार करता है।
    - इन आदर्शों में स्थायित्व का अभाव तथा परिवर्तनशीलता का गुण पाया जाता है।
  - **मान्यताएँ**
    - समूह का कल्याण करने वाले आदर्शों को मान्यताओं के रूप में स्वीकार किया जाता है।

सामाजिक मूल्यों का संस्तरण

- सामाजिक मूल्यों के संस्तरण के संबंध में भी डॉ. मुखर्जी ने पद सोपान का क्रम निर्धारित किया है जिसका वर्णन डॉ. मुखर्जी ने अपनी पुस्तक **The Dimentions of Values** में निम्नलिखित प्रकार से किया है:
  - **नैतिक मूल्य** – मनुष्य की सर्वप्रथम आवश्यकताएँ उसके स्वास्थ्य के संबंध में हैं।
    - अतः जीवन निर्वाह तथा सुरक्षा के मूल्यों को प्राथमिकता दी जाती है।
  - **सामाजिक मूल्य** – व्यक्ति अपने जीवन की सुरक्षा के बाद सामाजिक जीवन को महत्व देता है।
    - इसलिए वह संपत्ति, प्रस्थिति (Status), प्रेम तथा न्याय संबंधी बातों की ओर ध्यान देता है।
  - **आध्यात्मिक मूल्य –** डॉ. मुखर्जी का मत है कि मनुष्य के जीवन का अन्तिम लक्ष्य आध्यात्मिक शान्ति प्राप्त करना है।
    - अतः जीवन की सुरक्षा तथा सामाजिक जीवन से संबंधित बातों का निर्धारण करने के उपरान्त व्यक्ति आध्यात्मिक जीवन से संबंधित मूल्यों को मान्यता देता है।

सामाजिक मूल्यों के विभिन्न प्रकार

- समाज की तात्कालिक आवश्यकताओं की पूर्ति करने वाले सामाजिक मूल्यों को तात्कालिक मूल्य कहते हैं।
- व्यक्ति समाज की विशिष्ट आवश्यकताओं की पूर्ति करने के लिए जिन मूल्यों का निर्धारण करता है उनको विशिष्ट सामाजिक मूल्य कहते हैं।
- ऐसे मूल्य जो समाज व व्यक्ति के जीवन को प्रभावित करते हैं और जिनका विकास सार्वलौकिक रूप में मान्य कुछ लक्ष्यों तथा आदर्शों के अनुसार होना होता है, वे सार्वलौकिक मूल्य कहलाते हैं।

- जो मूल्य समाज और व्यक्ति के आंतरिक जीवन में समाहित रहते हैं उनको डॉ. मुखर्जी ने अंतर्निहित मूल्य के नाम से पुकारा है।
- जिन सामाजिक मूल्यों का विकास किसी आदर्श प्राप्ति के साधनों के रूप में होता हैं उनको डॉ. मुखर्जी ने आदर्श के उपकरण के नाम से पुकारा है।
- मुखर्जी ने सामाजिक मूल्यों के उपर्युक्त वर्गीकरण को स्वीकार किया है। मुखर्जी ने मूल्यों को मुख्य रूप से दो भागों में बाँटा है :
  - **साध्य मूल्य**
    - वे लक्ष्य हैं जिन्हें मानव सामाजिक जीवन और विकास के लिए स्वीकार करते हैं जो व्यक्ति के व्यवहार में अन्तर्निहित होते हैं।
  - **साधन मूल्य**
    - वे मूल्य हैं जिन्हें मनुष्य किसी साध्य को प्राप्त करने के लिए साधन के रूप में अपनाते हैं।
      - ✓ जैसे स्वास्थ्य, सम्पत्ति, सुरक्षा, सत्ता आदि साधन मूल्य हैं।
    - इनका उपयोग लक्ष्यों और संतुष्टि प्राप्त करने के साधन के रूप में किया जाता है।
- **डॉ. मुखर्जी ने सामाजिक मूल्यों के महत्व को समझाते हुए निम्नलिखित तर्क दिये हैं –**
  - समाज की उन्नति के लिए सामाजिक मूल्य समाज के सदस्यों के सामने उच्च आदर्श रखते हैं।
  - समाज में गैर सामाजिक मूल्य भी पाये जाते हैं।
    - सामाजिक मूल्य इन गैर सामाजिक मूल्यों को समाज से अलग करते हैं।
  - व्यक्तित्व के निर्माण में जिन सामाजिक गुणों की आवश्यकता है उनका निर्माण भी सामाजिक मूल्यों के द्वारा ही किया जाता है।
  - सुरक्षा तथा प्रेम व्यक्ति के उच्च सामाजिक मूल्य हैं।
    - ये व्यक्ति में विश्व बंधुत्व की भावना को दृढ़ बनाते हैं और विश्व शांति का मार्ग प्रशस्त करते हैं।
  - सामाजिक मूल्य सामाजिक नियंत्रण में सहायक होते हैं।
  - व्यक्ति समाज में प्रचलित मूल्यों के आधार पर व्यवहार करते हैं।
    - इससे व्यवहारों में एकरूपता उत्पन्न होती है।

गैर सामाजिक मूल्य या अपमूल्य की अवधारणा

- डॉ. मुखर्जी ने यह भी बतलाया कि व्यक्ति समाज के मूल्यों की उपेक्षा करके मनमाना व्यवहार भी कर सकता है।
  - उसके इस व्यवहार से संबंधित मूल्यों को वे गैर सामाजिक मूल्य अथवा अपमूल्य कहते हैं।
- ये गैर सामाजिक मूल्य समाज में अव्यवस्था उत्पन्न करते हैं और व्यक्ति के सामाजिक संबंधों तथा सामाजिक व्यवस्था को अव्यवस्थित कर देते हैं।
- समाज में अपराधों की वृद्धि हो जाती है और सामाजिक व्याधिकी (समस्याएँ) अपनी चरम सीमा पर पहुँचकर सामाजिक विघटन को जन्म देती है।
- डॉ. मुखर्जी का कहना है कि यदि व्यक्ति को शान्त जीवन व्यतीत करना है तो उसे गैर सामाजिक मूल्यों के कुप्रभावों से बचना होगा।
- डॉ. मुखर्जी का स्पष्ट मत है कि मूल्यों का व्यक्तित्व के विकास में जितना अधिक व्यवस्थित प्रवेश होगा, व्यक्ति उतना ही अधिक समाज में सामंजस्य करने में सफल होगा